वियना कांग्रेस के प्रमुख सिद्धांत (Main Principles of Vienna Congress) :-

वियना कांग्रेस में पाँच महाशक्तियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। अतः इस कांग्रेस में हुए निर्णय भी उन्हीं के हितों को ध्यान में रखकर लिए गये थे। वियना कांग्रेस में लिए गये निर्णय तीन प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित थे, जिनका पाँच महाशक्तियों ने स्वेच्छा से पालन किया था क्योंकि इन सिद्धांतों से सर्वाधिक लाभ इन्हीं शक्तियों को होना था।

वियना कांग्रेस के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित थे :-

(i) न्यायोचित राजवंश का सिद्धांत :- वियना कांग्रेस में फ्रांस का प्रतिनिधि तालीरां फ्रांस में बूर्बो वंश को प्रतिस्थापित करना चाहता था, अतः उसने न्यायोचित राजवंश के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांत के अनुसार यूरोप के उन देशों के वे पुराने राजवंश जो फ्रांस की क्रांति अथवा नेपोलियन की विजयों द्वारा अपदस्थ कर दिये गये थे, पुनः राजगद्दी पर आसीन किये गये। इस सिद्धांत के कारण फ्रांस में बूर्बो वंश की पुनर्स्थापना हो गयी।

(ii) शक्ति सन्तुलन का सिद्धांत :- यूरोप के राष्ट्र नेपोलियन के विरुद्ध निरंतर युद्धों से तंग आ गये थे अतः वे यूरोप में ऐसी व्यवस्था करना चाहते थे, जिससे स्थायी शान्ति की स्थापना हो सके। यूरोप के राजनीतिज्ञों, विशेषकर इंगलैण्ड के प्रतिनिधि कैसलरे का विचार था कि ऐसा तभी सम्भव था, जबकि शक्ति सन्तुलन के सिद्धांत का पालन किया जाये। इस सिद्धांत के अनुसार किसी भी देश को इतना शक्तिशाली होने से रोकना था कि वह अन्य देशों के लिए खतरा बन जाये। फ्रांस पिछले 25 वर्षों तक यूरोप के अन्य देशों के लिए खतरा बन रहा था, अतः वियना कांग्रेस में शक्ति संतुलन के सिद्धांत के द्वारा उसे चारों ओर से शक्तिशाली राष्ट्रों से घेर दिया गया।

(iii) पुरस्कार एवं दण्ड का सिद्धान्त :- यूरोप के जिन मित्र राष्ट्रों ने नेपोलियन का सामना किया था, उन्हें अपार हानि का सामना करना पड़ा था, अतः वे राष्ट्र युद्धों में हुई क्षति की पूर्ति करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त मित्र राष्ट्रों की सहायता करने वाले देशों को पुरस्कार देना तथा नेपोलियन का साथ देने वाले देशों को दण्डित करना भी वियना कांग्रेस में आवश्यक समझा गया था। इस सिद्धांत के अन्तर्गत इसी बात का पालन किया गया था। उदाहरणार्थ, डेनमार्क, जिसने नेपोलियन की सहायता की थी, से नार्वे छीनकर स्वीडन को दे दिया गया क्योंकि स्वीडन मित्र राष्ट्रों के साथ रहा था।

Ajanta PRODUCTS Oxford

→

विएना कांग्रेस द्वारा यूरोप का पुनर्निर्माण (Reconstruction of Europe by Vienna Congress) :-

विएना कांग्रेस के निर्णयों से यूरोप के प्रत्येक देश में हुए परिवर्तनों का वर्णन निम्नलिखित है :-

1. **फ्रांस** :- फ्रांस की सीमाएं वही निर्धारित की गयीं जो 1790 ई. से पहले थी। फ्रांस पर 70 करोड़ फ्रैंक का युद्ध हर्जाना भी लगाया गया तथा यह तय किया गया कि जब तक फ्रांस इस युद्ध हर्जाने को नहीं देगा, तब तक वैलिंगटन (इंगलैण्ड का सेनापति) के नेतृत्व में मित्र राष्ट्रों की एक सेना वहां रहेगी। फ्रांस के महत्वाकांक्षाओं को रोकने के लिए उसके चारो ओर शक्तिशाली राज्यों की स्थापना की गयी।

इसके अतिरिक्त ताल्लीरां के इच्छानुसार राजवंश के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए फ्रांस में बूर्बो वंश की पुनर्स्थापना की गयी तथा लुई अठारहवां को फ्रांस का शासक स्वीकार किया गया।

2. **रूस** :- विएना कांग्रेस से रूस को काफी लाभ हुआ। नेपोलियन के विरुद्ध युद्धों में रूस ने फिनलैण्ड एवं बसराबिया जीता था। इन प्रदेशों पर उसका ही अधिकार मान लिया गया। इसके अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व की ओर टर्की के क्षेत्रों पर भी उसका अधिकार बना रहा। हेजन ने लिखा है कि रूस को सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि 'ग्राण्ड डची ऑफ वारसा' का अधिकांश भाग उसे प्राप्त हो गया, जिससे उसकी सीमाएँ यूरोप में पश्चिम की ओर काफी दूर तक फैल गयी। यूरोप के में रूस के राजनीतिक महत्व में वृद्धि हुई।

3. **हॉलैण्ड** :- फ्रांस को उत्तर में बढ़ने से रोकने के लिए हॉलैण्ड में बेल्जियम को मिला दिया गया तथा वहां Orange वंश की स्थापना की गयी।

4. **प्रशा** :- प्रशा को राइन नदी के पश्चिमी भाग, सैक्सनी राज्य का लगभग आधा भाग, पोलैण्ड एवं पोमेरेनिया के भी कुछ प्रदेश मिले।

विएना कांग्रेस ने जर्मनी के अनेक राज्यों के विषय में भी निर्णय लिए। जर्मनी में प्रशा के अतिरिक्त कुल 38 राज्यों को कायम रखा गया जिन्हें नवीन जर्मन राज्य संघ के अधीन रखा गया। इस संघ को 'जर्मन परिसंघ' कहा गया। इस नवीन जर्मन परिसंघ की एक केन्द्रीय राज्य राज सभा (Federal Diet) बनायी गयी, जिसका अध्यक्ष आस्ट्रिया को बनाया गया।

5. **स्विट्जरलैण्ड** :- स्विट्जरलैण्ड को तटस्थ देश घोषित किया गया। फ्रांस के तीन प्रदेशों को भी स्विट्जरलैण्ड को दे दिया गया।

6. **स्पेन** :- स्पेन बूर्बो वंश की पुनर्स्थापना की गयी तथा ~~फिनलैण्ड~~ फर्डिनेण्ड सप्तम को वहां का शासक बनाया गया।

→

7. पुर्तगाल :- पुर्तगाल ने यद्यपि मित्र - राष्ट्रों की मदद की थी, किन्तु फिर भी उसे कुछ नहीं दिया गया।

8. डेनमार्क एवं स्वीडन :- डेनमार्क ने नेपोलियन की सहायता की थी, अतः उससे नार्वे छीनकर स्वीडन को दे दिया गया। फिनलैण्ड स्वीडन से लेकर रूस को दे दिया गया।

9. इटली :- इटली को अत्यधिक हानि हुई। आस्ट्रिया को लोम्बार्डी तथा वेनेशिया प्रदेश दे दिये गये, जो इटली के सबसे धनी और सैनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण प्रान्त थे। इसके अतिरिक्त नेपल्स में बूर्बो वंशीय शासक फर्डिनेण्ड सप्तम को पुनर्स्थापित किया गया। पीडमाण्ट का राज्य सार्डीनिया को दे दिया गया। टस्कनी तथा मोडेना में पुनः पुराने राजवंशों की स्थापना की गयी तथा नेपोलियन की पत्नी मारिया लुईसा को, जो आस्ट्रिया की राजकुमारी थी, परमा राज्य दे दिया गया। इस प्रकार इटली पर आस्ट्रिया का प्रभुत्व बना रहा तथा इटली मात्र एक भौगोलिक नाम रह गया।

10. आस्ट्रिया :- वियना कांग्रेस का अधिवेशन मेटरनिख की अध्यक्षता में हुआ था, अतः मेटरनिख ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया एवं अपने देश के सम्मान और शक्ति में वृद्धि करने में सफल हुआ। आस्ट्रिया को पोलैण्ड के कुछ क्षेत्र, एड्रियाटिक के पूर्वी तट पर स्थित इलीरिया प्रान्त, लोम्बार्डी और वेनेशिया के प्रदेश प्राप्त हुए।

11. इंगलैण्ड :- वियना कांग्रेस से सर्वाधिक लाभ इंगलैण्ड को हुआ। इंगलैण्ड, जो नेपोलियन का सर्वप्रमुख शत्रु था तथा जिसने बार-बार उसके विरुद्ध गुटों का निर्माण किया था, तथा जिसने मित्र-राष्ट्रों के लिए साहूकार का कार्य किया था, को यूरोप से बाहर अनेक प्रदेश मिले, जिससे इंगलैण्ड की औपनिवेशिक साम्राज्य में पर्याप्त वृद्धि हुई। इंगलैण्ड का उत्तर सागर में स्थित हेलीगोलैण्ड भूमध्य सागर में स्थित माल्टा तथा आयोनियन द्वीपसमूह, दक्षिण अफ्रीका में केप कॉलोनी तथा श्रीलंका एवं अन्य द्वीपों पर आधिपत्य हो गया। इन उपनिवेशों के मिलने से इंगलैण्ड सर्वश्रेष्ठ औपनिवेशिक शक्ति (Colonial Power) बन गया।

इस प्रकार अपने विभिन्न निर्णयों के द्वारा वियना कांग्रेस ने यूरोप के मानचित्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए।

उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त, वियना कांग्रेस में कुछ अन्य भी महत्त्वपूर्ण कार्य किये गये, जिनमें प्रमुख निम्न थे—

(i) दास प्रथा समाप्त करने का प्रयास :- तत्कालीन यूरोप के कुछ देशों में दास प्रथा प्रचलित थी। अफ्रीका के काले दासों का व्यापार अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आरम्भ हुआ था जिससे इंगलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल तथा फ्रांस आदि लाभान्वित हो रहे थे। इस प्रथा के विरोध में इंगलैण्ड में विल्बरफोर्स के नेतृत्व में प्रबल आंदोलन चल रहा था। अतः वियना कांग्रेस में कैसलरे ने इस कुप्रथा को समाप्त कराने का प्रयास किया। यद्यपि →

कैसलरे अपने प्रयत्न में पूर्णतया सफल न हो सका, किन्तु फिर भी इस कांग्रेस में एक प्रस्ताव पारित हुआ जिसके द्वारा दास प्रथा को अनैतिक, अमानवीय तथा सभ्यता और मानव अधिकारों के विपरीत बताया गया।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय कानून :- यूरोप की कुछ समस्याओं का हल ढूंढने के लिए विएना कांग्रेस में अन्तर्राष्ट्रीय कानून बनाने का प्रयास किया गया। इन कानूनों के अन्तर्गत प्रमुख युद्ध और शांतिकाल में व्यापार एवं वाणिज्य, अन्तर्राष्ट्रीय जल का उपयोग आदि थे।

(iii) यूरोपीय संयुक्त व्यवस्था की स्थापना :- यूरोप में शांति बनाये रखने के उद्देश्य से एक संस्था का भी निर्माण किया गया, जिसे यूरोपीय संयुक्त व्यवस्था (Concert of Europe) कहा गया।

उपर्युक्त निर्णयों पर 9 जून 1815 ई० को विएना कांग्रेस के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हुए।

25-8-2020